जिक्र उसी की होती है जिसकी फिक्र होती है।
– अज्ञात

वैश्विक अर्थव्यवस्था सिकुड़ी

जाहिर है, कोरोना वायरस सबके अनुमान से कहीं ज्यादा मारक साबित हुआ है, और अभी इसके काबू में आने की शुरुआत भी नहीं हुई है। ऐसा मानने की कोई गुंजाइश नहीं है कि वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट जरूरत से ज्यादा निराशाजनक तस्वीर पेश कर रही है।

जीवन शाह।

कोरोना और लॉकडाउन ने हमें कितने गंभीर आर्थिक संकट में डाल दिया है, दुनिया अब धीरे–धीरे इसका हिसाब लगाने की स्थिति में पहुंच रही है। विश्व बैंक ने पिछले दिनों अपनी ग्लोबल इकनॉमिक प्रॉस्पेक्ट्स रिपोर्ट जारी की, जिसमें कहा गया है कि महामारी और शटडाउन के सम्मिलित प्रभावों से इस साल वैश्विक अर्थव्यवस्था 5.2 फीसदी तक सिकुड़ सकती है।

इसे दूसरे शब्दो में यूं कहा गया है कि दुनिया दूसरे विश्वयुद्ध के बाद की सबसे बड़ी आर्थिक मंदी की चपेट में आ गई है। रिपोर्ट के मुताबिक संसार की 90 फीसदी अर्थव्यवस्थाओं में मंदी की यह लहर 1930 की ऐतिहासिक मंदी से भी ज्यादा तेज होगी। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। रिपोर्ट बताती है कि सरकार द्वारा घोषित आर्थिक पैकेजों और राहतों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था इस वित्तीय वर्ष में 3.2 फीसदी सिकुड़ सकती है। अभी अप्रैल में विश्व बैंक ने उम्मीद जताई थी कि भारत की अर्थव्यवस्था में इस साल 1.5 से 2.8 फीसदी तक की ग्रोथ हो सकती है।

जाहिर है, कोरोना वायरस सबके अनुमान से कहीं ज्यादा मारक साबित हुआ है, और अभी इसके काबू में आने की शुरुआत भी नहीं हुई है। ऐसा मानने की कोई गुंजाइश नहीं है कि वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट जरूरत से ज्यादा निराशाजनक तस्वीर पेश कर रही है।

गोल्डमैन सैक्स और नोमुरा जैसी अन्य वित्तीय एजेंसियां तो मौजूदा वित्त वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था में 5 फीसदी तक की सिकुड़न आने की बात कह रही हैं। बहरहाल, आंकड़ों से अलग हटकर समझने की कोशिश करें तो स्थिति यह है कि सरकारी क्षेत्र और कृषि क्षेत्र को छोड़कर इकॉनमी के हर सेक्टर में मंदी के भीषण प्रभाव देखने को मिल सकते हैं। इन क्षेत्रों में कई कंपनियां बंद होंगी और लोग बड़े पैमाने पर बेरोजगार होंगे। सरकार के साधन भी सीमित हैं इसलिए यह बहुत जरूरी है कि इन सीमित संसाधनों का इस्तेमाल सोच–समझ कर किया जाए। विशेषज्ञ लगातार इस बात पर जोर दे रहे हैं कि हमारी कोशिश अर्थव्यवस्था में नीचे से मांग पैदा करने की होनी चाहिए। यह तभी होगा जब सबसे ज्यादा चिंता लोगों के रोजगार की ही की जाएगी। यानी यह एक महत्वपूर्ण सूत्र हो सकता है कि सरकार उन क्षेत्रों की मदद को प्राथमिकता दे जो सबसे ज्यादा रोजगार मुहैया कराते हैं। दूसरी बड़ी जरूरत महत्वपूर्ण आंकड़ों की कमी को तत्काल दूर करने की है।

देश में खपत के ट्रेंड बताने वाले कंजंप्शन–एक्सपेंडिचर सर्वे (सीईएस) 2011–12 के बाद से करवाए ही नहीं गए हैं। तिमाही आधार पर रोजगार और बेरोजगारी बताने वाले आंकड़े जुटाए तो जा रहे हैं, लेकिन नियमित तौर पर जारी नहीं किए जा रहे। 2018–19 के आंकडे इस महीने जारी हुए हैं। इस धुंध से सटीक फैसले करने में दिक्कत होगी। यह ऐसा वक्त है जब हमें बुरी खबरों से डरने की कोई जरूरत नहीं रह गई है। हम बुरे हाल में हैं, सबको पता है।

अपूर्णता 'प्राकृतिक' है

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

परफेक्ट बनने की चाह बहुत से लोगों को गुस्सैल बना देती है, उनकी सामाजिक और मानसिक स्थिति दयनीय हो जाती है। अगर आप भी परफेक्शन की चाह में भटकेंगे तो एक समय बाद भी गुस्सैल लोगों की श्रेणी में शामिल हो जाएंगे।

अज्ञानता की स्थिति में अधूरपन या अपूर्णता ही प्राकृतिक है, जबकि परफेक्शन के लिए काफी मेहनत करने की आवश्यकता है। बुद्धिमानी या ज्ञानोदय की स्थिति में, अपूर्णता आपकी मेहनत का परिणाम है, परफेक्शन एक अनिवार्यता है, जिसे आप नकार नहीं सकते। वैराज्ञ की स्थिति में आप गैर जरूरी चीजों की भी परिपूर्णता या उत्कृष्टता के साथ देखभाल कर सकते हैं। जब हम दिल से प्रसन्न होते हैं तब हम कभी पर्फेक्शन या परिपूर्णता के ऊपर ध्यान नहीं देते।

संपादकीय

भीषण संकट का दौर

वर्तमान समाज भीषण संकट के दौर से गुजर रहा है। हर स्तर पर संवाद और विश्वास की कमी दिख रही है। राजनीतिक स्तर पर इसकी कमी और ज्यादा है। देश के वर्तमान राजनीतिक दलों के बीच संवाद और आपसी विश्वास की कमियां आज चरम पर हैं। स्वस्थ, स्वच्छ और निष्पक्ष संवाद की यह कमी लोकतंत्र के लिए तो खतरा है ही, पूरे समाज के लिए भी खतरनाक है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में सत्ता पक्ष बेहद ताकतवर है, वहीं विपक्ष निस्तेज है, कमजोर है और उसकी साख में भी कमी है। शायद यही कारण है कि 2014 के बाद 2019 में भी जनता ने विपक्षी दलों को महत्व नहीं दिया। सभी दल छोटे–छोट स्वार्थों में लिप्त हैं। आज विपक्षी दलों के बीच विश्वास की इतनी कमी है कि ये जनकल्याण को लेकर एक साझा कार्यक्रम तक बनाने में अक्षम हैं। देश के मुख्य विपक्षी दल की साख में कमी की वजह से आज उसके नेता कई बार मजाक का विषय बन जाते हैं। कई बार वह अच्छी बातें कहते हैं, लेकिन जनता उसको गंभीरता से नहीं लेती। वहीं, सत्ता पक्ष में भी संवाद की कमी देखने को मिल रही है। यह सिस्टम सही नहीं है। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बेहद घातक है। संवाद और असहमति का सम्मान इस देश की तासीर रही है। देश की राजनीति में असहमति को हमेशा सम्मान मिला है। अब इसमें गिरावट दिख रही है। असहमति को स्वीकार करने की क्षमता लगातार कम हो रही है। इसका असर समाज जीवन में भी देखने को मिल रहा है। राजनीतिक नेतृत्व कहीं न कहीं पूरे समाज का आदर्श होता है। समाज का बड़ा हिस्सा उसका अनुकरण करता है। लोकतंत्र के लिए वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था से एक और खतरा है। आज राजनीतिक कार्यकर्ता दो खेमे में बंट गए हैं। एक 'अंधभक्त' और एक 'अंधविरोधी'। यह दोनों स्थितियां ठीक नहीं है।

पिछले दिनों वेस्ट इंडीज को टी–20 विश्व कप जिताने वाले कप्तान डैरेन सैमी ने भी 2014 में आईपीएल खेलने के दौरान कुछ साथी खिलाड़ियों द्वारा उनको कालू कहने पर ऐतराज जताते हुए उनसे माफी मांगने को कहा।

जंगली, चिंकी, मोमो

मनोज चतुर्वेदी।

अमेरिका में एक अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लॉयड की पुलिस के हाथों हुई हत्या के बाद से दुनिया भर में रंगभेद और नस्ली हिंसा के विरोध में माहौल बन गया है। इस घटना के बाद तमाम खिलाड़ियों ने भी अपने ऊपर हुई नस्ली टिप्पणियों के बारे में बताया है। इस संबंध में पूर्व भारतीय क्रिकेटर लक्ष्मीपति बालाजी ने कहा, 'नस्ली टिप्पणियां स्कूल, कॉलेज से लेकर हर क्षेत्र में देखने को मिलती हैं। पिछले दिनों वेस्ट इंडीज को टी–20 विश्व कप जिताने वाले कप्तान डैरेन सैमी ने भी 2014 में आईपीएल खेलने के दौरान कुछ साथी खिलाड़ियों द्वारा उनको कालू कहने पर ऐतराज जताते हुए उनसे माफी मांगने को कहा। बाद में उन खिलाड़ियों के यह कहने पर कि उन्होंने प्यार से कालू कहा था, वे माफी की अपनी मांग से पीछे हट गए।

भारतीय खेलों की बात करें तो नस्ली टिप्पणियों का इसमें हमेशा से समावेश रहा है। पूर्वोत्तर राज्यों और दक्षिणी प्रदेशों से आने वाले खिलाड़ियों को ऐसी टिप्पणियों का सामना अक्सर करना पड़ता है। भारत की अंतरराष्ट्रीय बॉक्सर सरिता देवी बताती हैं कि एक कोच हमेशा उन्हें जंगली ही कहते थे। वह कहती हैं कि पूर्वोत्तर राज्यों के नागरिकों का चेहरा थोड़ा भिन्न होने की

वजह से उन्हें चिंकी या मोमो भी बोला जाता रहा है। बैडमिंटन खिलाड़ी ज्वाला गुट्टा भी अपने साथ हुए इस तरह के व्यवहार के बारे में बताती हैं। इन लोगों को ट्रेनों और बसों में सफर करते समय तंग किए जाने की भी शिकायतें आती रही हैं। दक्षिण भारतीय खिलाड़ियों को मैदान में मद्रासी कह कर पुकारा जाना भी आम बात रही है।

भारत को 1980 के मास्को ओलिंपिक में आखिरी हॉकी स्वर्ण पदक दिलाने वाले कप्तान वासुदेवन भास्करन बताते हैं कि 'पटियाला में खेलते हुए जब मेरे पास गेंद आती तो दर्शक चिल्लाते थे, कालिया पास दे।' भास्करन कहते हैं कि 'हमें नस्ली अंदाज की शुरू से आदत थी। मैं जब चेन्नई के लोयोला कालेज में पढ़ता था, तब मेरे साथ विजय अमृतराज और जयकुमार रोयप्पा भी पढ़ते थे। उस समय हमारे प्रोफेसर हम तीनों को डार्क, डार्कर और डार्केस्ट नाम से बुलाते थे।' यह सही है कि भास्करन को ऐसी टिप्पणियों से कभी कोई फर्क नहीं पड़ा। पर ऐसी घृणामूलक टिप्पणियों से कोई खिलाड़ी आहत भी हो सकता है। हो सकता है इसके पीछे नस्ली भावना न हो, पर क्या हम इस तरह की भावनाएं व्यक्त करने से नहीं बच सकते हैं? अभी पिछले दिनों ही युवराज सिंह एक कार्यक्रम में यजुवेंद्र चहल के खिलाफ जाति सूचक शब्द का इस्तेमाल करके सोशल मीडिया पर फंस गए थे। उनकी टिप्पणी को चहल ने तो मजाक में लिया, पर अन्य लोगों द्वारा बनाए गए दबाव के कारण युवराज को माफी मांगनी पड़ी थी।

क्रिकेट की बात करें तो मौजूदा समय में भारत की मर्जी के बगैर पत्ता भी नहीं खड़कता है। इसकी वजह क्रिकेट में अधिकांश पैसे का भारत से निकलना है। पर भारतीय क्रिकेटरों की आज जैसी हालत पहले नहीं हुआ करती थी। पहले भारतीय टीम के इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में खेलने जाने पर अक्सर उन्हें नस्ली टिप्पणियों का शिकार होना पड़ता था और अधिकांश मौकों पर हमारे खिलाड़ी चुप्पी साध जाया करते थे। आकाश चोपड़ा बताते हैं, 'हम जब 2008 में इंग्लैंड में लीग खेलने गए तो दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी हमेशा मुझे पाकी कहकर बुलाते थे।'

अष्टयोग-5038

	3	1		6		5
7	30	2	25		34	4
4			3		7	
	34	3	35		33	6
1	2			4		
	32	5	42	3	32	7
3			6		2	1

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5037 का हल

1	2	4	6	7	5	3
7	26	2	31	2	36	4
4	5	1	3	6	7	2
6	32	5	29	3	37	6
2	3	6	4	1	7	5
5	34	3	36	5	32	7
3	5	7	6	4	2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

असहमति के स्वर को कमजोर

मोहन। इस वातावरण से आम जनता खासकर मेहनतकश गरीबों का नुकसान होता है। इन 'अंधभक्त' और 'अंधविरोधियों' की वजह से बड़ी संख्या में 'ट्रोल्स' का जन्म हो गया है। ये 'ट्रोल्स' समाज में असहमति के स्वर को कमजोर कर रहे हैं। हो सकता है जाने–अनजाने में ये 'ट्रोल्स' जो कर रहे हैं उससे उन्हें कुछ व्यक्तिगत फायदा हो जाए, लेकिन वास्तव में वे भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था और देश का नुकसान कर रहे हैं। या हम यह कह सकते हैं वे भारत की मूल तासीर को नष्ट करने का काम कर रहे हैं। दुर्भाग्य यह है कि देश के हर तरह का नेतृत्व है अंधभक्तों और अंधविरोधियों दोनों को बढ़ावा दे रहा है। वर्तमान समय में संवाद का एक बड़ा साधन मीडिया भी निष्पक्ष नहीं दिख रहा है। आज ज्यादातर पत्रकार किसी न किसी खेमे में खड़े दिख रहे हैं। टीवी चौनलों के एंकर तो पार्टी बन जा रहे हैं। अगर हम बड़े और व्यापक रूप से देखें तो समाज सिर्फ बुद्धि से नहीं विवेक और संवेदनशीलता से चलता है।